

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 55 — प्रद्युम्न का इतिहास

5 October 2026



दस दिन के होने से पहले ही चुराकर समुद्र में फेंका गया कृष्ण और रुक्मिणी का शिशु एक मछली, एक दैत्य की पाकशाला और स्वयं रति की ममतामयी देखभाल से होकर गुजरता है — और शम्बर का विजेता बनकर आकाश-मार्ग से घर लौटता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह पचपनवाँ अध्याय बताता है कि रुद्र के क्रोध से भस्म हुए कामदेव किस प्रकार कृष्ण और रुक्मिणी के प्रथम पुत्र प्रद्युम्न के रूप में पुनः जन्मे; कैसे दैत्य शम्बर ने नवजात को चुराकर समुद्र में डाल दिया; और कैसे वह शिशु, मछली के पेट से निकलकर विधाता की इच्छा से अपनी ही पूर्व-पत्नी के हाथों में पहुँचा, शत्रु के घर में पला, शम्बर का वध किया और उस माँ के पास लौटा जिसका हृदय नाम सुनने से पहले ही उसे पहचान गया।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण

- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, उत्तरार्ध)
- अध्याय: 55 (पञ्चपञ्चाशत्तम अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: प्रद्युम्न का इतिहास
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: द्वारका, समुद्र और दैत्य शम्बर का भवन
- केंद्रीय विषय: प्रद्युम्न रूप में कामदेव का पुनर्जन्म; शम्बर द्वारा अपहरण; मायावती (रति) द्वारा पालन; शम्बर का पतन; द्वारका में वापसी
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 55, श्लोक 1-40
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, दशम स्कन्ध, उत्तरार्ध)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

चौवनवें अध्याय में रुक्मिणी के भाई रुक्मी को जीवनदान देकर भी लज्जित किए जाने पर बलरामजी ने नित्य आत्मा के उपदेश से रुक्मिणी को सान्त्वना दी; रुक्मी ने भोजकट नगर बसाया और प्रतिज्ञा की कि कृष्ण को मारे बिना वह घर न लौटेगा। फिर प्रभु ने द्वारका में रुक्मिणी से विधिपूर्वक विवाह किया, और श्रीपति तथा स्वयं लक्ष्मी के इस मिलन पर समूचा नगर आनन्द से भर उठा।

कामदेव का पुनर्जन्म

शुकदेवजी ने राजा परीक्षित को कथा आगे सुनाई। बहुत पहले कामदेव, जो स्वयं भगवान् वासुदेव के अंश हैं, रुद्र के क्रोध से भस्म हो गए थे। फिर से देह पाने के लिए वे उन्हीं प्रभु की शरण में गए जिनके वे अंश हैं। और इस प्रकार वही काम, कृष्ण के वीर्य से, विदर्भ-राजकुमारी रुक्मिणी के गर्भ से जन्मे और प्रद्युम्न नाम से विख्यात हुए — किसी भी बात में अपने पिता से कम नहीं।

कामस्तु वासुदेवांशो दग्धः प्राग् रुद्रमन्युना ।

देहोपपत्तये भूयस्तमेव प्रत्यपद्यत ॥ १ ॥

kāmas tu vāsudevāṁśo dagdhaḥ prāg rudra-manyunā dehopapattaye bhūyas tam eva pratyapadyata

अर्थ: वासुदेव के अंश कामदेव, जो पहले रुद्र के क्रोध से भस्म हो चुके थे, देह प्राप्त करने के लिए पुनः उन्हीं प्रभु की शरण में गए। (स्कन्ध 10, अध्याय 55, श्लोक 1)



रुद्र के क्रोध से भस्म हुए कामदेव रुक्मिणी के गर्भ से कृष्ण-पुत्र प्रद्युम्न के रूप में पुनः जन्म लेते हैं — किसी भी बात में अपने पिता से कम नहीं।

शम्बर शिशु को उठा ले गया

उस जन्म का आनन्द लगभग तुरन्त ही छिन गया। इच्छानुसार रूप धारण करने वाला दैत्य शम्बर जानता था कि यह बालक उसका शत्रु बनने वाला है। शिशु के दस दिन के होने से पहले ही वह उसे सूतिकागृह से उठा ले गया, समुद्र में फेंक दिया और यह मानकर घर लौट गया कि संकट टल गया।



बालक को अपना भावी शत्रु जानकर शम्बर दस दिन के होने से पहले ही शिशु को चुराकर समुद्र में फेंक देता है — जहाँ एक बलवान् मछली उसे समूचा निगल जाती है।

एक बलवान् मछली ने शिशु को समूचा निगल लिया। वही मछली अन्य अनेक मछलियों के साथ मछुआरों के विशाल जाल में फँसी, और वे उसे भेंट रूप में शम्बर के पास ले गए। उसके रसोइये उस अद्भुत मछली को पाकशाला में ले जाकर काटने लगे — और भीतर एक जीवित शिशु मिला।

मायावती और नारदजी के वचन

चकित रसोइयों ने शिशु को शम्बर की पाकशाला में सेवारत मायावती को सौंप दिया। उसका मन सन्देह से भरा था, तभी देवर्षि नारद आए और उन्होंने उसे सब कुछ बताया — यह बालक कौन है, कैसे जन्मा और मछली के पेट तक कैसे पहुँचा।

मायावती कोई साधारण सेविका नहीं थी। वह कामदेव की यशस्विनी पत्नी रति थी, जो शिव के क्रोध से पति की देह भस्म हो जाने के बाद उनके नई देह पाने की प्रतीक्षा में इतने समय से थी। शम्बर ने उसे अपने घर की दाल-भात पकाने के काम में लगा रखा था; अब अपनी गोद के शिशु को स्वयं कामदेव जानकर उसने अपना सारा स्नेह उस पर उड़ेल दिया।



रसोइयों को मछली के भीतर जीवित शिशु मिलता है और वे उसे मायावती को सौंपते हैं; नारदजी बताते हैं कि यह बालक स्वयं कामदेव है, और प्रतीक्षारत रति उस पर अपना स्नेह उड़ेल देती है।

प्रद्युम्न का यौवन और रति का रहस्योद्घाटन

थोड़े ही समय में कृष्ण-पुत्र भरपूर यौवन को प्राप्त हुए, इतने सुन्दर कि उन्हें देखने वाली स्त्रियों का मन विचलित हो उठता। इतने वर्षों से प्रतीक्षा करती रति को अब अपने सामने कोई बालक नहीं दिखता था। कमल-दल जैसे नेत्रों वाले, लम्बी भुजाओं वाले, मनुष्यों में सबसे सुन्दर उस युवक को अपना पति जानकर उसने उसे पालक-माता की दृष्टि से नहीं, बल्कि पत्नी की लज्जामयी मुस्कान से देखा।

प्रद्युम्न चकित रह गए। “माँ,” उन्होंने कहा, “तुम्हारा भाव बदल गया है; माता का भाव छोड़कर तुम मेरे साथ कामिनी जैसा व्यवहार कर रही हो।”

तामाह भगवान् कार्ष्णिर्मातस्ते मतिरन्यथा ।

मातृभावमतिक्रम्य वर्तसे कामिनी यथा ॥ ११ ॥

tām āha bhagavān kārṣṇir mātās te matir anyathā mātṛ-bhāvam atikramya vartase kāmīnī yathā

अर्थ: भगवान् कृष्ण-पुत्र ने उससे कहा: “माँ, तुम्हारी बुद्धि बदल गई है; मातृभाव को लाँघकर तुम कामिनी की भाँति आचरण कर रही हो।” (स्कन्ध 10, अध्याय 55, श्लोक 11)

तब रति ने उन्हें सत्य बताया। “आप नारायण के पुत्र हैं,” उसने कहा, “जिन्हें दैत्य शम्बर घर से चुरा लाया था। मैं रति हूँ, आपकी विधिपूर्वक पत्नी, और आप, मेरे प्रभु, स्वयं कामदेव हैं। दस दिन के होने से पहले ही उस दैत्य ने आपको समुद्र में फेंका; एक मछली आपको निगल गई, और उसके पेट से आप इसी घर में आए। सौ प्रकार की माया जानने वाले इस दुर्जय शत्रु को आप अपनी माया — मोहन आदि — से मार डालिए। और आपकी माता आपके लिए वैसे ही रो रही हैं जैसे बच्चे छिन जाने पर कुररी, जैसे बछड़े से बिछुड़ी गाय।”

परिशोचति ते माता कुररीव गतप्रजा ।
पुत्रस्नेहाकुला दीना विवत्सा गौरिवातुरा ॥ १५ ॥

pariśocati te mātā kurarīva gata-prajā putra-snehākulā dīnā vivatsā gaur ivāturā

अर्थ: आपकी माता आपके लिए उस कुररी पक्षिणी की भाँति शोक कर रही हैं जिसके बच्चे खो गए हों — पुत्र-स्नेह से व्याकुल और दीन, बछड़े से बिछुड़ी व्याकुल गाय की भाँति। (स्कन्ध 10, अध्याय 55, श्लोक 15)

महामाया विद्या का दान

यह कहकर मायावती ने — जिसे मायाओं में निपुण होने के कारण यह नाम मिला था — महात्मा प्रद्युम्न को महामाया नाम की वह विद्या प्रदान की जो हर माया का नाश करती है।

प्रभाष्यैवं ददौ विद्यां प्रद्युम्नाय महात्मने ।
मायावती महामायां सर्वमायाविनाशिनीम् ॥ १६ ॥

prabhāṣyaivam dadau vidyām pradyumnāya mahātmane māyāvātī mahā-māyām sarva-māyā-vināśinīm

अर्थ: ऐसा कहकर मायावती ने महात्मा प्रद्युम्न को महामाया नामक विद्या दी, जो समस्त मायाओं का नाश करने वाली है। (स्कन्ध 10, अध्याय 55, श्लोक 16)

शम्बर का पतन

उस विद्या से सज्जित प्रद्युम्न सीधे शम्बर के पास गए और असह्य व्यंग्यों से उसे उकसाते हुए युद्ध के लिए ललकारा। पैर से कुचले सर्प की तरह तिलमिलाया शम्बर गदा लेकर बाहर निकला, क्रोध से उसकी आँखें ताँबे-सी लाल थीं, और उसने वज्र के टकराने जैसी कठोर गर्जना के साथ गदा प्रद्युम्न पर फेंकी। प्रद्युम्न ने आती हुई गदा को अपनी गदा से हटा दिया और क्रोध में अपनी गदा शत्रु पर चला दी।

अब शम्बर ने मय दानव से सीखी आसुरी माया का सहारा लिया। अदृश्य होकर आकाश में उठकर उसने कृष्ण-पुत्र पर अस्त्रों की वर्षा कर दी। उस वर्षा से पीड़ित रुक्मिणी-नन्दन महारथी प्रद्युम्न ने शुद्ध सत्त्वमयी वह विद्या प्रकट की जो हर माया को निष्फल कर देती है।

बाध्यमानोऽस्त्रवर्षेण रौक्मिणेयो महारथः ।

सत्त्वात्मिकां महाविद्यां सर्वमायोपमर्दिनीम् ॥ २२ ॥

bādhyamāno 'stra-varṣeṇa raukmiṇeyo mahā-rathaḥ sattvātmikāṁ mahā-vidyāṁ sarva-māyopamardinīm

अर्थ: अस्त्र-वर्षा से पीड़ित होकर रुक्मिणी-पुत्र महारथी ने शुद्ध सत्त्वमयी उस महाविद्या का प्रयोग किया जो समस्त मायाओं को कुचल देती है। (स्कन्ध 10, अध्याय 55, श्लोक 22)

फिर दैत्य ने सैकड़ों मायाएँ चलाई — गुह्यकों, गन्धर्वों, पिशाचों, नागों और राक्षसों की मायाएँ — और कृष्ण-पुत्र ने उन सबको नष्ट कर दिया। अन्त में तीखी तलवार उठाकर प्रद्युम्न ने शम्बर का ताँबे-जैसी दाढ़ी-मूँछों वाला सिर मुकुट और कुण्डलों सहित धड़ से अलग कर दिया।



मायावती की दी हुई महामाया विद्या से सज्जित प्रद्युम्न शुद्ध सत्त्वमयी विद्या से शम्बर की सौ मायाओं को तोड़ देते हैं और दैत्य का अन्त करते हैं।

आकाश-मार्ग से घर वापसी

देवता उनकी स्तुति गाते हुए पुष्पों की राशि बरसा रहे थे, और आकाश में विचरण की शक्ति रखने वाली उनकी पत्नी प्रद्युम्न को आकाश-मार्ग से द्वारका ले गई। बिजली से युक्त मेघ की भाँति वे उसके साथ उस भव्य अन्तःपुर में उतरे, जहाँ सैकड़ों स्त्रियाँ रहती थीं।

मेघ-सा श्याम वर्ण, पीले रेशमी वस्त्र, लम्बी भुजाएँ, रक्ताभ नेत्र और काली घुँघराली अलकों से घिरा मुस्कुराता कमल-मुख — उन्हें देखकर स्त्रियों ने उन्हें स्वयं कृष्ण समझा और लज्जावश इधर-उधर छिप गईं। धीरे-धीरे सूक्ष्म अन्तर से समझकर कि ये प्रभु नहीं हैं, वे प्रसन्न होकर पास आईं, उनके साथ खड़ी स्त्री-रत्न को देखकर विस्मित।

रुक्मिणी ने अपने पुत्र को पहचाना

तब काले नेत्र-प्रान्तों और मधुर वाणी वाली विदर्भ-राजकुमारी रुक्मिणी को अपना खोया पुत्र स्मरण हो आया — और ममता से उनके स्तनों से दूध बह चला। “कमलनयन, पुरुषों में रत्न जैसा यह कौन है?” वे सोचने लगीं। “किसका पुत्र है, और यह युवती कौन है जिसे इसने पाया है? मेरा चुराया हुआ पुत्र भी, यदि कहीं जीवित हो, तो ठीक इसी आयु और इसी रूप का होगा। पर रूप और अंगों में, चाल और स्वर में, मुस्कान और चितवन में यह शार्ङ्गधन्वा प्रभु के इतना समान कैसे हुआ? यही वह बालक अवश्य होगा जिसे मैंने कभी अपने उदर में पाला था — यह सोचते ही उसके हृदय में स्नेह उमड़ पड़ा, और बाईं भुजा का फड़कना शुभ संकेत देने लगा।”

स एव वा भवेन्नूनं यो मे गर्भे धृतोऽर्भकः ।

अमुष्मिन् प्रीतिरधिका वामः स्फुरति मे भुजः ॥ ३४ ॥

sa eva vā bhaven nūnaṁ yo me garbhe dhṛto 'rbhakaḥ amuṣmin prītir adhikā vāmaḥ sphurati me bhujah

अर्थ: अथवा निश्चय ही यह वही बालक है जिसे मैंने गर्भ में धारण किया था; इसके प्रति मेरा प्रेम अत्यधिक है, और मेरी बाईं भुजा फड़क रही है। (स्कन्ध 10, अध्याय 55, श्लोक 34)



बाईं भुजा फड़कती और हृदय उमड़ता हुआ, रुक्मिणी उस युवा अजनबी को अपना खोया पुत्र जान लेती हैं; कृष्ण मौन रहते हैं और नारदजी आनन्दित परिवार को पूरी कथा सुनाते हैं।

नारदजी का कथन और द्वारका का आनन्द

रुक्मिणी इसी विचार में थीं कि उत्तम कीर्ति वाले भगवान् श्रीकृष्ण देवकी और वसुदेव के साथ वहाँ पधारे। प्रभु सब कुछ जानते थे, फिर भी मौन रहे; देवर्षि नारद ने ही सबको सब बताया — शम्बर ने शिशु को कैसे चुराया और उसके बाद जो कुछ हुआ।

विज्ञातार्थोऽपि भगवांस्तूष्णीमास जनार्दनः ।

नारदोऽकथयत् सर्वं शम्बराहरणादिकम् ॥ ३६ ॥

vijñātārtho 'pi bhagavāṁs tūṣṇīm āsa janārdanaḥ nārado 'kathayat sarvaṁ śambarāharaṇādikam

अर्थ: सारी बात जानते हुए भी भगवान् जनार्दन मौन रहे; नारदजी ने शम्बर द्वारा अपहरण से लेकर सब कुछ कह सुनाया। (स्कन्ध 10, अध्याय 55, श्लोक 36)

वह महान् आश्चर्य सुनकर कृष्ण के अन्तःपुर की स्त्रियों ने इतने वर्षों से खोए और मानो मृत्यु से लौटे उस बालक का अभिनन्दन किया। देवकी और वसुदेव, कृष्ण और बलराम, रुक्मिणी और सभी स्त्रियों ने उस नवयुगल को गले लगाकर आनन्द पाया। द्वारकावासियों ने जब सुना कि खोया हुआ प्रद्युम्न लौट आया है, तो वे आपस में कहने लगे, “अहो, सौभाग्य से यह बालक मानो मृत्यु से ही लौट आया!”

शुकदेवजी ने एक कोमल टिप्पणी के साथ कथा समाप्त की। प्रद्युम्न लक्ष्मी-निवास कृष्ण की इतनी सटीक प्रतिमूर्ति थे कि उनकी माताओं के स्थान पर रहने वाली स्त्रियाँ भी बार-बार उन्हें अपना स्वामी समझकर लज्जावश एकान्त में चली जातीं। जब स्वयं कामदेव अपनी माताओं को ऐसा विचलित कर सकते थे, तो अन्य स्त्रियों का विचलित होना क्या आश्चर्य?

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. देवता भी अपना अस्तित्व प्रभु से पाते हैं। भस्म हुए कामदेव को देह केवल वासुदेव से मिल सकती थी, जिनके वे अंश हैं, जैसा श्लोक 1 कहता है। सृष्टि की हर शक्ति और सौन्दर्य उन्हीं के उधार प्रकाश से चमकता है।
2. प्रभु ने अपने ही बालक का अपहरण क्यों होने दिया। कृष्ण पहले क्षण से सब जानते थे, फिर भी उन्होंने शम्बर को करने दिया — क्योंकि दैत्य का अपराध ही वह मार्ग था जिससे काम की पुनर्स्थापना होनी थी। काम की बिछुड़ी पत्नी रति शम्बर के घर में रह रही थी; समुद्र में फेंके जाकर और उस पाकशाला तक पहुँचकर ही शिशु उसकी गोद में आ सकता था, महामाया विद्या पा सकता था और बड़ा होकर उसे मिटा सकता था जो समझता था कि उसने उसे मिटा दिया। श्लोक 36 में प्रभु का मौन उदासीनता नहीं, पहले से ही पूर्ण योजना का धैर्य है।
3. शुद्ध सत्त्व से जन्मा ज्ञान माया को जीत लेता है। शम्बर सौ मायाओं का स्वामी था, फिर भी श्लोक 16 में मायावती की दी हुई विद्या और श्लोक 22 की सत्त्वमयी विद्या ने उन सबको बहा दिया। माया बड़ी माया से नहीं, शुद्धता और सत्य से पराजित होती है।
4. सत्य ज्ञात होने से पहले भी धर्म को थामे रहें। अपनी पहचान न जानते हुए भी प्रद्युम्न ने माता के सम्बन्ध का सम्मान किया और श्लोक 11 में स्पष्ट बोले। जब तक प्रभु छिपा हुआ प्रकट न करें, मर्यादा ही हमारी रक्षा करती है।
5. प्रभु अपनी कथा अपने सन्तों से कहलवाते हैं। कृष्ण मौन रहे और नारदजी बोले। प्रभु की लीलाओं का सत्य हम तक सन्तों के द्वारा पहुँचता है, जिन्हें उसे कहने में आनन्द आता है।

एक भाक्तेमय चिन्तन

इस अध्याय के सारे आश्चर्यों में जो बात मन में ठहर जाती है, वह है बुद्धि के समझने से पहले ही एक माँ की फड़कती बाईं भुजा। रुक्मिणी के पास कोई प्रमाण नहीं। वे तर्क करती हैं, तुलना करती हैं, सन्देह करती हैं — और इस बीच उनका शरीर पहले से जानता है कि सामने खड़ा युवक उनका खोया हुआ बालक है। लगता है प्रेम बुद्धि से पहले ही प्रभु के अपनों को पहचान लेता है। क्या हमारे भीतर भक्ति ऐसे ही नहीं काम करती? कृष्ण का नाम सुनते ही हृदय उछल पड़ता है, कारण समझ में बाद में आता है; पहचान पहले होती है, समझ पीछे। और रति है, जिसने पति की अनुपस्थिति की लम्बी राख में प्रतीक्षा की और उसे शिशु रूप में अपनी ही गोद में पाया। उसकी प्रतीक्षा एक जागरण थी। प्रद्युम्न स्वयं एक और शान्त शिक्षा देते हैं: समुद्र में फेंके गए, शत्रुओं के बीच पले, फिर भी पिता की छवि उनमें इतनी पूरी थी कि समूचा अन्तःपुर उन्हें प्रभु समझ बैठा। हम जिस भी समुद्र में फेंके गए हों, अपने उद्गम की छवि खोती नहीं। हम रति की तरह प्रतीक्षा करें, रुक्मिणी की तरह पहचानें, और प्रद्युम्न की तरह प्रभु की छवि धारण करें।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज अपने जीवन की उस एक परिस्थिति को याद करें जो समुद्र में फेंके जाने जैसी लगती है — कोई हानि, कोई वियोग, बिना उत्तर की लम्बी प्रतीक्षा। फिर प्रद्युम्न को स्मरण करें: निगले गए, ले जाए गए, छिपाए गए, और इस सबके बीच ठीक वहीं पहुँचाए गए जहाँ प्रभु चाहते थे। उस परिस्थिति को इस सरल प्रार्थना के साथ कृष्ण को अर्पित करें: “मुझे मार्ग नहीं दिखता, पर आप उसे पहले से जानते हैं।” कुछ शान्त क्षण उस विश्वास में टिकें, और आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का पचपनवाँ अध्याय हमें प्रद्युम्न देता है: कृष्ण और रुक्मिणी के पुत्र रूप में पुनर्जन्मे कामदेव, जिन्हें शम्बर ने चुराया, मछली ने निगला, छद्मवेश में रति ने पाला, और जो उसकी दी हुई विद्या से विजयी हुए। इसका एक केन्द्रीय सत्य यह है कि प्रभु की देखभाल अपनों के प्रति कभी विफल नहीं होती — शत्रु की क्रूरता ही वह मार्ग बनी जो बालक को उसकी पत्नी, उसकी शक्ति और उसके घर तक ले गई। हम भी अपने वियोग की ऋतुओं में उसी अदृश्य हाथ पर विश्वास करें।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी), दशम स्कन्ध (उत्तरार्ध), अध्याय 55।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-55-the-history-of-pradyumna-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

